3.00 P.M.

Deplorable conditions of Marathwada due to earthquake

***श्री सतीश प्रधान** (महाराष्ट्र): सभापति महोदय मैं इस विशेष उल्लेख के माध्यम से सरकार का ध्यान मराठवाड़ा भूकम्पग्रस्तों की ओर दिलाना चाहता हूं। इन भूकम्पग्रस्तों की तरफ सरकार का जो दृष्टिकोण है और इस क्षेत्र में भूकम्पग्रस्तों की मदद के लिए जो काम हो रहा है उसकी तरफ मैं इस सदन का और सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

महोदय, मैं पंद्रह दिन पहले की स्थिति के बारे में उल्लेख कर रहा हूं। पंद्रह दिन पहले महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में बारिश की शुरूआत हुई। साथ-साथ तूफान भी था।

पिछले वर्ष मराठवाड़ा क्षेत्र में भूकम्प के कारण बड़ी तबाही हुई थी। हजारों मकान गिर गये थे। उसके बाद महाराष्ट्र सरकार ने भूकम्पग्रस्तों की मदद के लिए मकान बनाने की कोशिश की।

महाराष्ट्र सरकार ने अस्थायी मकानों और स्कूलों की व्यवस्था करने की शुरूआत की थी। माननीय प्रधानमंत्री ने भी इस भूकम्पग्रस्त क्षेत्र का दौरा किया था। प्रधानमंत्री ने इस क्षेत्र की जनता को पूरी सहायता का आश्वासन दिया था। इस क्षेत्र में शुरू-शुरू जो काम हुआ उसके बाद काम की गति मंद हो गयी।

कुमारी सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र): मैं भी इस विषय पर बोलना चाहती हूं।

श्री सतीश प्रधान: आप बाद में बोल सकती हैं। बारिश के बाद मराठवाड़ा क्षेत्र की हालत के बारे में कई अखबारों में खबरें आ चुकी हैं। वहां के भूकम्पग्रस्तों की दयनीय स्थिति के बारे में अखबारों में विस्तृत खबरें छपी हैं। मैंने उसके बाद इस क्षेत्र का दौरा किया। मैंने चार गांवों का दौरा किया था।

तावसी ताड नाम के गांव में मैं गया था। सरकार ने वहां स्कूल के लिए अस्थायी व्यवस्था की थी। लेकिन जब मैं वहां गया तो देखा कि तूफान के कारण वहां जो अस्थायी स्कूल की व्यवस्था की थी, उसकी छत हवा में उड़ गयी है। वहां बनाये गये स्कूल के लिए जो चादरें इस्तेमाल की गई थी, वह भी उड़ गई थी। स्कूल के लिए मजबूत लकड़ी की जगह बांस की लकड़ी का इस्तेमाल किया था। स्कूल और मकान बनाने के लिए जो चादरें इस्तेमाल की गई थी वह तारकोल से चिपकायी गयी थी जिसके कारण वह सब हवा में उड़ गयीं।

वहां के मकानों के लिए इस्पात की चादरें इस्तेमाल नहीं की गयी थी। लकड़ी का भी इस्तेमाल नहीं हुआ था। बांस का इस्तेमाल किया गया था, जो बहुत कमजोर होता है। स्कूल तथा मकानों के लिए जो भी निर्माण सामग्री इस्तेमाल की गई थी वह सब हवा में उड़ गई। स्कूल के स्थान पर अब खाली जगह दिखायी दे रही है।

भूकम्पग्रस्तों के लिए दूसरे गांवों में जो मकान बनाये गये थे, वहां भी मैं गया था। उन गांवों में 15×40 फुट के मकान बनाये गये थे। नीचे की जमीन पर ना तो सीमेंट का फर्श लगाया गया था न कोई और व्यवस्था ही की गई थी। बारिश के पानी के कारण मकानों में कीचड़ हो गया था। जो छोटे-छोटे मकान बनाये गये थे, वे हाथ से धक्के मात्र से हिलने लगते थे।

तूफान से यह मकान उड़ न जाये इसके लिए लोहे की तारों से उनको बांधा गया था। तेज हवा के कारण यह मकान हिल रहे थे। मकानों के अंदर बिजली के लिए जो तारें लगाई गयी थीं वह भी आधी-अधूरी थी। कई जगह बिजली की तारें यहां वहां अस्त-व्यस्त दिखायी दे रही थी।

जब मैं उन गांवों का दौरा कर रहा था तब मैंने देखा कि वहां पीने के पानी की भी काफी हालत खराब है। एक गांव के बाहर मैंने एक हैन्ड पम्प देखा। वहां जाकर जब मैंने पीने के बारे में लोगों से पूछा तो मुझे बताया गया कि इस हैन्ड पम्प से पानी आता ही नहीं है। लोग पीने के पानी के लिए तरस रहे थे। गांव के लोगों ने मुझे बताया कि हैन्ड पम्प के लिए जो बोरिंग किया गया था उसमें काफी पानी मिला था। लेकिन जो पाईप बाद में लगाये गये, वे उतनी गहराई तक नहीं पहुंचाये गये थे इसलिए हैन्ड पम्प से पानी नहीं आ रहा है। यह हालत तावसी गांव की थी दूसरे गांवों में भी यही हाल था। वहां के स्कूल की चादरें दो-दो किलोमीटर दूर तक उड़ गयी थीं।

इसलिए मैं सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि यह जो हालत है उसकी तरफ तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार को इस मामले में तुरन्त कार्रवाई करनी चाहिए। सरकार को मौके पर जाकर वास्तविक स्थिति का जायजा लेना चाहिए और कार्रवाई करनी चाहिए।

प्रधानमंत्री ने भूकम्पग्रस्तों की सहायता के लिए सौ करोड़ रुपयों की सहायता की घोषणा की थी। मैं

*मूल मराठी भाषण का हिन्दी अनुवाद

समझता हूं कि इस क्षेत्र की स्थिति देखकर ऐसा महसूस होता है कि और सहायता की आवश्यकता है। देश के कोने-कोने से भूकम्पग्रस्तों के लिए सहायता राशि दी गयी थी। देश-विदेश से भूकम्पग्रस्तों के लिए जो सहायता राशि प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा हुई है वह महाराष्ट्र को मिलनी चाहिए। मैं केन्द्र सरकार से अनुरोध करता हूं कि पूरी सहायता राशि जब तक नहीं दी जाती तब तक वहां का कार्य पूरा नहीं होगा इस पूरे मामले में तुरन्त कार्रवाई करने की आवश्यकता है। मैं उम्मीद करता हूं कि सरकार जरूर इस बात पर गौर करेगी और कार्रवाई करेगी।

कुमारी सरोज खापर्डे: मैं श्री प्रधान जी को मराठी में जवाब देना चाहती हूं। प्रधान जी ने इस बात का उल्लेख किया है कि महाराष्ट्र के भूकम्पग्रस्तों की सहायता के लिए केन्द्र सरकार ने जो राशि महाराष्ट्र सरकार को दी है वह पर्याप्त नहीं है। इस बात से मैं सहमत हूं। मानसून के बाद वहां बारिश शुरू हुई। तेज तूफान के कारण किसी गांव में स्कूल की चादरें उड़ भी गई होंगी, मैं यह बात मानती हूं। लेकिन इस बात का यह मतलब नहीं होता कि महाराष्ट्र सरकार ने और राज्य के मुख्यमंत्री शरद पवार ने भूकम्पग्रस्तों के लिए कुछ किया ही नहीं। महाराष्ट्र सरकार ने भूकम्पग्रस्तों के लिए राहत कार्य किया है उसकी आपको प्रशंसा करनी चाहिए।

SHRI SATISH PRADHAN: I do not want to make any debate of this. I just want to point out that wherever I have personally visited....(*Interrruption*).

MISS SAROJ KHAPARDE: You have not visited areas which are affected. ....(*Interrruption*).

SHRI SATISH PRADHAN: ....I am going to speak the truth.

MISS SAROJ KHAPARDE: You have mentioned a village. That village was not affected that much by the earthquake.

SHRI SATISH PRADHAN: You are welcome to visit....(*Interrruption*).

MISS SAROJ KHAPARDE: I had been there. ....(*Interrruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Please do not join issues with each other. Shri Jagmohan. ....(*Interrruptions*).

SHRI GOPALRAO VITHALRAO PATIL (Maharashtra): Out of 49 villages which are totally destroyed, 22 villages have been adopted by voluntary agencies and the work is going on by these agencies only. The Government has not at all started construction....(*Interrruption*).

MISS SAROJ KHAPARDE: Have the people who were affected by the earthquake been benefited by you or by the Maharashtra Government or by the Prime Minister's Fund? (*Interrruptions*). This is absolutely unfair.

SHRI GOPALRAO VITHALRAO PATIL: I am addressing the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): She is not here to reply to the debate. You are not here to raise new points. It is not a general discussion. Every special mention has some controversial features. If you join issues like this. I think the business will not be over till tomorrow.

SHRI GOPALRAO VITHALRAO PATIL: I also associate myself with that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Okay. You associate. That is all. Mr. Jagmohan. (*Interrruptions*). No running commentaries, Sarojji.

MISS SAROJ KHAPARDE: Sir, it is not fair. I am a person from the Treasury Benches. I will not tolerate baseless charges against my Government whether it is the Government of India or the Government of Maharashtra. (*Interrruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Mr. Patil, please sit down.

SHRI JAGMOHAN (Nominated): Sir, I would like to....(*Interrruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Please sit down, all of you. Let Mr. Jagmohan speak.